विश्व शांति का एक नारा। यज्ञ से होगा जग उजियारा॥

यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि
मृत्योरन्तिकं नीत एव।
तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पार्शमेनं
शतशारदाय॥ (अथर्व. 3.11.2)

यदि व्यक्ति की आयु क्षीण हो चुकी हो,
वह जीवन से निराश हो चुका हो,
मृत्यु के बिल्कुल समीप पहुँच चुका हो,
तो भी यज्ञचिकित्सा उसे मृत्यु
के मुख से लौटा लाती है अर्थात्
उसे पुनः नव जीवन देती है।

इदं हवियातुधानान् नदी फेनमिवावहत्॥ -अथर्व. 1.8.2
यज्ञ मे होमी गई हवि रोग एवं प्रदूषणरूपी यातुधनों को वैसे ही वि नष्ट कर देती है जैसे नदी, झागों को।